Vol 6 Issue 12 Sept 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

उत्तराखण्ड प्रदेश के नगरीकरण सन्दर्भ में जनपद रुद्रप्रयाग का विशेष

डॉ. गुरूप्रसाद थपलियाल[1] , प्रमोद सिह रावत [2]
[1]असि.प्रो. भूगोल विभाग हे. न. ब. गढवाल केन्द्रीय विश्व विद्यालय श्रीनगर गढवाल उत्तराखण्ड .
[2]शोध छात्र भूगोल विभाग हे. न. ब. गढवाल केन्द्रीय विश्व विद्यालय श्रीनगर गढवाल उत्तराखण्ड .

प्रस्तावना

नगर उस कस्बे को कहा जाता है, जिसमें अनेक जातियां तथा अनेक व्यवसायों से जीविको पार्जन करने वाले लोग निवास करते हैं, ऐसे अधिवास जिसके निवासी गैर प्राथमिक व्यवसायों द्वारा अपना जीविकोपार्जन करते हैं, नगरीय अधिवास कहलाते है नगरो में जनसंख्या और आवासो का सघन समूह पाया जाता है। गांवो की तुलना में नगर अधिक विस्तृत और आन्तरिक संरचना वाले होते है। सामाजिक आर्थिक दृष्टि से नगर अधिक विकसित माने जाते है। नगरीय क्षेत्रों में उद्योग, परिवहन,शिक्षा प्रौद्योगिकी विकास के केन्द्र होने से मनुष्य के सांस्कृतिक/आर्थिक विकास से जीवन स्तर ऊँचा रहता है। सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में डच, फ्रासिसियो तथा अंग्रेज व्यापारी भारत आये पुर्तगालियों एवं फ्रासिसियों का व्यापार भारत वर्ष के छोटे, छोटे क्षेत्रों तक समिति रहा, सन,1600ई०, इंग्लैण्ड ने भारत में व्यापार के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गठन किया, जिससे व्यापार का विस्तार किया गया सन, 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के उपरान्त भारत में अग्रेजों की शासन व्यवस्था में परिवर्तन हुआ ईस्ट इण्डिया कम्पनी की बजाय इंग्लैण्ड की महारानी का साम्रज्य भारत में स्थापित होने से भारतवर्ष में नगरीय शासन की वर्तमान व्यवस्था के सन्दर्भ में भी यह एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योकि नगरीय शासन की जो व्यवस्था इंग्लैण्ड में थी, उसी के अनुरूप भारतवर्ष में भी नगरीय शासन के संचालन हेतु अधिनियम बनाये जाने लगे। तत्कालीन संयुक्त प्रांन्त के अधीन देहरादून,मसूरी, अल्मोडा और नैनीताल नगर निकायों के गठन हेतु बनाये गये सम्बंन्धित अधिनियम इसके उदाहरण हैं।

तत्कालीन संयुक्त प्रान्त सरकार द्वारा नगरनिकायों के गठन हेतु अधिनियम बनाए गए

1:– दि यूनाईटेड प्राविन्सेंज म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट सन,1973 अधिनियम संस्था–15 वर्ष 1877

1:– दि यूनाईटेड प्राविन्सेज म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट सन,1900 अधिनियम संस्था –1 वर्ष 1900 ई०

अध्ययन क्षेत्र : उत्तराखण्ड प्रदेश 28°7″ उत्तरी अक्षांश, से 31°4″ उत्तरी अक्षांश तथा 77°7″ पूर्व अक्षांश से 81°1″ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है, उत्तराखण्ड प्रदेश 53483 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। वर्ष 2011 में कुल 10086292 जनसंख्या निवास करती थी जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 7036954 तथा नगरीय जनसंख्या 3049338 है।

विधितन्त्र – प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार क्षेत्र भ्रमण से एकत्रित किये गये। द्वितीय स्रोत्रों में नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत, विभागो से प्राप्त किया गया है।

उत्तराखण्ड प्रदेष में नगरीकरण :– उत्तर प्रदेश नगर पालिका दि यूनाईटेड प्राविन्सेज सीवरेज एण्ड ड्रेनेज एक्ट 1894 (अधिनियम) संख्या–3 वर्ष 1894 दि यूनाईटेड प्राविन्सेज सीवरेज एण्ड ड्रेनेज एक्ट 1973 (अधिनियम) संख्या–15 वर्ष 1877।दि यूनाईटेड प्राविन्सेज सीवरेज एण्ड ड्रेनेज एक्ट 1900 (अधिनियम) संख्या–1 वर्ष 1990।।उपरोक्त अधिनियमों के उपरान्त बीसवीं सदी के प्रारम्भ में नगर निकायों के गठन और नगरीय स्वशासन के लिए संयुक्त प्रान्त के निम्न समेंकित अधिनियम बनाए गए।

1:– दि यूनाइटेड प्राविन्सेज म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट 1916(अधिनियम संख्या –2 सन, 1914)

2:– दि यूनाइटेड प्राविन्सेज म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट 1916(अधिनियम संख्या–2 सन, 1916)

उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून, मसूरी, अल्मोडा,हरिद्वार,रूडकी एवं काशीपुर को छोडकर शेष नगर निकायों का गठन संयुक्त प्रान्त टाउन एरिया अधिनियम 1914 के अधीन हुआ था, जिनमें कुछ निकायों का वर्गोंत्थान तथा नगरपालिका के रूप में हो गया जब कि शेष टाउन एरिया अब नगर पंचायत के रूप में विद्यमान है। 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के द्वारा नगरपालिकाओं से सम्बन्धित –18 अनुच्छेद और एक अनुसूची संविधान के अन्तस्थापित किए जाने के उपरान्त उत्तर प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश स्वायतशासन विधि (संशोधन अधिनियम 1994 के द्वारा संयुक्त प्रान्त टाउन एरिया अधिनियम 1914 को निरासित कर दिया ।संविधान (74 संशोधन)

अधिनियम 1992 के द्वारा नगर पालिकाओं को नगर निगम, पालिका परिषद और नगर पंचायतों के रूप के वर्गीकृत किए जाने के उपरान्त राज्य सरकार ने अधिनियम को निरसारित करना आवश्यक समझा, टाउनएरिया अधिनियम,1992के द्वारा संविधान में नगरपालिकाओं के गठन और वर्गीकरण सम्बंधी अनुच्छेद –243–04 निम्नवत है।

(क) किसी संक्रमणशील क्षेत्र के लिये अर्थात ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्र में संक्रमणशील क्षेत्र के लिये कोई नगर पंचायत का चाहे किसी नाम से ज्ञात हो

(ख) किसी लघुतर नगरीय क्षेत्र के लिए नगरपालिका परिषद का और

(ग) किसी वृहत्तर नगरीय क्षेत्र के लिए निगम का गठन किया जायेगा ।

उत्तराखण्ड राज्य गठन से पूर्व नगरीय क्षेत्रों में नगर निगम 1,देहरादून नगरपालिका परिषद 31, नगर पंचायत 31, छावनी परिषद क्षेत्र 9, औद्योगिक नगर 2 जागणना नगर 12, थे, उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद उत्तराखण्ड में नगरीयकरण मे वृद्दि से नगरीय क्षेत्रों का विस्तार किया गया तथा कुछ कस्बो की नगरीय क्षेत्रों का विस्तार करने की योजना है। उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद नगरीय क्षेत्रों में नगर निगम 6 जो देहरादून, हरिद्वार ,हल्द्वानी, काशीपुर, रूद्रपुर, रूडकी है।(1 ,लाख से अधिक जनसंख्या वालें क्षेत्र) नगरपरिषदें 28,50 हजार से 1 लाख तक की जनसंख्या वाले क्षेत्र नगर पंचायते 38 (5 हजार से 50 हजार तक की जनसंख्या वाले क्षेत्र उत्तराखण्ड मे सर्वाधिक नगर वाले जिले देहरादून, हरिद्वार, उद्यमसिंह नगर है। सबसे कम नगर वाला जिला बागेश्वर है। जहां नगर केवल बागेश्वर है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतवर्ष को गॉवों का देश कहा जाता था, 1951 की जनगणना के अनुसार भारत की ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का अनुपात 89.2 और 10.8 था, वर्ष 1951 में भी उत्तराखण्ड में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का आनुपातिक प्रतिशत 88.3 और 11.7 था किन्तु वर्तमान समय में नगरीय जनसंख्या परिदृश्य बदल गया उत्तराखण्ड में बीसवींसदी में न केवल नगरो की जनसंख्या मे वृद्दि हुई है, बल्कि नगरों की संख्या भी बढी है।

उत्तराखण्ड प्रदेश में विभिन्न वर्षो में ग्रामीण एंव नगरीय जनसंख्या

क्र. सं.	जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	ग्रामीण		नगरीय	
			जनसंख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
1	1951	518335	224126	88.3	294209	11.7
2	1961	3106356	2731319	87.9	375037	12.1
3	1971	3821960	3260654	85.3	561306	14.7
4	1981	5728508	4579432	79.9	1149076	20.1
5	1991	7050634	5442002	77.2	1608632	22.8
6	2001	8479562	6309317	74.4	2170245	25.6
7	2011	10086292	7036954	69.77	3049338	30.23

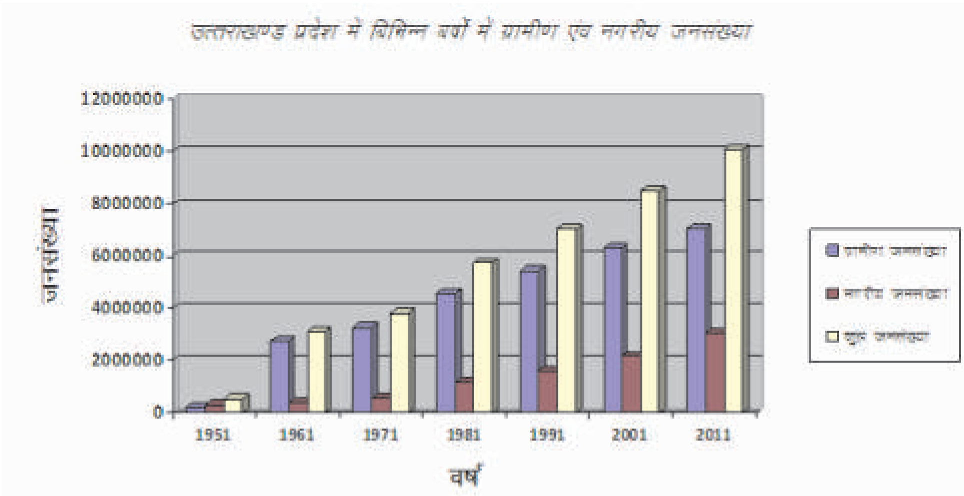

उत्तराखण्ड प्रदेश के जनपदवार वर्ष 2011 के अनुसार ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत

क्र. सं.	जनपद का नाम	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत	ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत
1	देहरादून	55.52	44.48
2	नैनीताल	38.94	61.06
3	हरिद्वार	36.66	63.34
4	ऊद्यमसिंहनगर	35.58	64.42
5	पौड़ी	16.40	83.60
6	चमोली	15.17	84.83
7	चम्पावत	14.77	85.23
8	पिथौरागढ़	14.40	85.60
9	टिहरी गढ़वाल	11.33	88.67
10	अल्मोड़ा	10.01	89.99
11	उत्तरकाशी	7.36	92.64
12	रुद्रप्रयाग	4.10	95.90
13	बागेश्वर	3.49	96.51
योग	उत्तराखण्ड प्रदेश	30.23	69.77

स्रोत–जनगणना कार्यालय देहरादून

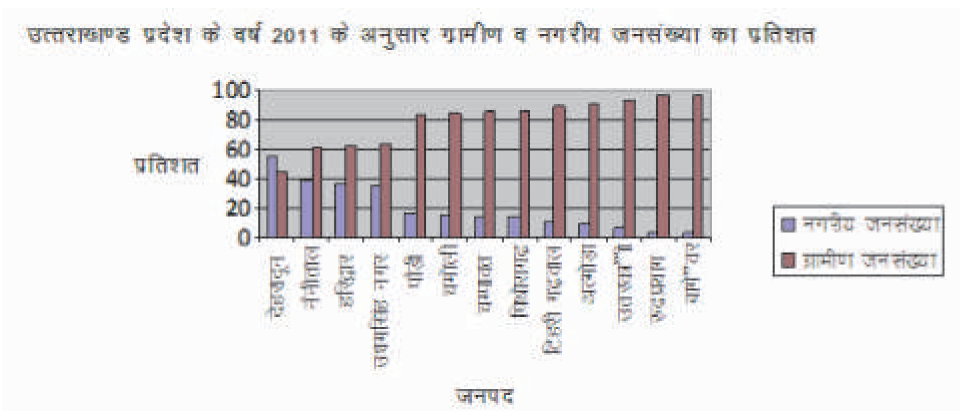

उत्तराखण्ड प्रदेश में वर्ष 2001 के अनुसार 74.33 प्रतिशत (6310275) जनसंख्या ग्रामीण अधिवासो में निवास करती है, शेष 25.67 प्रतिशत 2779074 जनसंख्या नगरीय अधिवासो में निवास करती है, उत्तराखण्ड प्रदेश में वर्ष 2011 में 69.77 प्रतिशत (77036954) जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों के अधिवासो में निवास करती है, जबकि 38.23 (3049338) जनसंख्या नगरीय अधिवासों में निवास करती है उत्तराखण्ड प्रदेश

में 2001 से 2011 के दौरान नगरीकरण में 4.56 प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई है। देश के सभी राज्यों में नगरीयकरण में उत्तराखण्ड का 20 वाँ स्थान है उत्तराखण्ड के सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या देहरादून में 55.52 प्रतिशत है जबकि सबसे कम बागेश्वर जनपद में 3.49 प्रतिशत है उत्तराखण्ड में कम ग्रामीण जनसंख्या देहरादून 44.48 प्रतिशत नैनीताल में 61.04 प्रतिशत हरिद्वार में 63.64 प्रतिशत ऊधमसिंह नगर में 64. 42 प्रतिशत है। जबकि सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत रुद्रप्रयाग में 95.90 प्रतिशत उत्तरकाशी में 92.64 प्रतिशत अल्मोड़ा में 89.91 प्रतिशत हैं। उत्तराखण्ड प्रदेश के देहरादून, हरिद्वार, उधमसिंह नगर (नैनीताल) मे। नगरीयकरण अधिक होने का मुख्य कारण इन जनपदो में औद्योगिक, चिकित्सा, शिक्षा यातायात, संसाघनो का अधिक विकास होने से पर्वतीय जनपदो की जनसंख्या का प्रवास इन जनपदो मे अधिक होने से नगरीय जनसंख्या में बृद्वि हुई है। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा 6दिसम्बर 2017 को 3 नगर निगम 22 नगरपालिका परिषद 10 नगर पंचायतों के सीमा बिस्तार के लिये केबिनेट के सहमतिके आघार पर इन निकायो में 353 गॉव पूण रूप से 44 गॉव आंशिक रूप से सम्मलित किये जाने की मंजूरी दी गई।

6 दिसम्बर 2017 को उत्तराखण्ड प्रदेश के निकायो का सीमा बिस्तार

नगर निगम में सम्मलित गॉव	नगर पालिका में सम्मलित गॉव	नगर पालिका में सम्मलित गॉव
देहरादून 60	देवप्रयाग 15	हर्रवटपुर 01
हल्द्वानी 52	किच्छा 05	कोटद्वार 73
काशीपुर 16	सितारगंज 01	नरेन्द्रनगर 01
नगर पालिका में सम्मलित गॉव	जोशीमठ 05	पिथोंरागढ 06
टनकपुर 04	अल्मोड 23	नगर पंचायत में सम्मलित गॉव
रूद्रपुर 05	विकसनगर 02	अगस्त्यमुनी 02.उखीमठ 02
बरहाट 16	डोईवाला 08	सुल्तानपुर 03.गुलरभोज 01
खटिमा 08	भवाली 05	झवरेडा 01 दिनेशपुर 02
कर्णप्रयाग 06	बागेश्वर 21	शक्तिनगर 01 भीमताल 04
बडकोट 03	बजपुर 09	कीर्तिनगर 01
ग्दरपुर 03	श्रीनगर 07	लढोर 01

स्रोत दैनिक जागरण देहरादून 9 दिसम्बर 2017

जनपद रुद्रप्रयाग अध्ययन क्षेत्र :जनपद रुद्रप्रयाग 30°10" उत्तरी अक्षांश, से 30°50" उत्तरी अक्षांश तथा 78°50" पूर्व अक्षांश से 79°22" पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है, रुद्रप्रयाग जनपद 1984 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। जिसकी अधिकतम ऊँचाई समुद्र सतह से 3886 मीटर केदारनाथ एवं सबसे न्यूनतम ऊँचाई 610 मीटर है। जनपद रुद्रप्रयाग में तीन तहसीलें, रुद्रप्रयाग, उखीमठ, जखोली है, जिनमें 658 आबाद ग्राम, 38 गैर आवाद ग्राम हैं, वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 242285 है। यह नगर ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ मार्ग पर अलकनन्दा, मंन्दाकिनी के संगम तट पर बसा हुआ बेदकाओं में स्थित है। यह नगर सदैव केदार घाटी और पोखरी तहसील जखोली तहसील ऊखीमठ तहसील के निवासियों का मुख्य बाजार रहा है। यह नगर पालिका जिला मुख्यालय हाने से यहां लोग अधिक बसने लगे जिससे यहां की जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। उतर प्रदेश सरकार स्वायत शासन (क) विभाग की अधिसूचना संख्या 4184/टी/टी/1 –ए –53एन0 ए0/64 लखनऊ दिनांक 18 नवम्बर 1968 के द्वारा नोटीफाइड एरिया रुद्रप्रयाग होने के कारण इस नगर निकाय की सीमाओं का विस्तार कर नगर पालिका का दर्जा दिया गया।

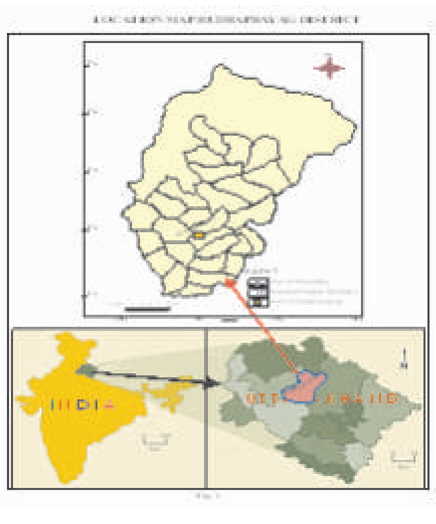

जनपद रुद्रप्रयाग में विभिन्न वर्षो में नगरीय जनसंख्या

वर्ष	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1991	198662	1843	0.9
2001	227439	2732	1.2
2011	242285	242285	4.1

जनपद रुद्रप्रयाग में एक नगर पालिका है ।जहां की कुल जनसंख्या वर्ष 2001में 2242 है। जनपद रुद्रप्रयाग में वर्ष 1991 में 1843 जनसंख्या थी, वर्ष 1991 से 2001 तक नगरीय जनसंख्या में 901 नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 से 2011 तक नगरीय जनसंख्या में 7193 नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है। नगर में समतल भूमि कम होने के कारण नगरीय क्षेत्रों के समीपवर्ती क्षेत्रो, में जैसे सुमेपुर,रतुडा,नगरासु,,तिलवाडा तक मानव बसाव क्षेत्रों का विकास हो रहा है। जनपद रुद्रप्रयाग के नगर पालिका क्षेत्र का विकास होना चाहिये जिससे नगरपालिका की आय में वृद्धि हो सके।

नगरपालिका रुद्रप्रयाग की विभिन्न मदो से आय रू०में

मद	आय रू०
भवन कर	67584,00
तहबाजारी	6701600
जमानत व टेण्डर फीस	81317,00
पार्किग शुल्क	1170,00

वर्ष 2000–2001 में नगर पालिका रूद्रप्रयाग की आय रू०1389 ,475,00 थी। शेष आय राज्य सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले अनुदान से है। रूद्रप्रयाग में वर्ष 2000 एवं 2001 में 242940, 305025 यात्रियों व प्रर्यटकों का आगमन रहा, रूद्रप्रयाग नगर की मुख्य समस्या वाहनों के आवागमन के लिये चौडी सडकों का अभाव, सीवर लाइन की कमी है। जनपद में बडे जन समूह द्वारा उत्पादित व निष्कासित अपशिष्ट का निस्तारण एक बडी समस्या है । नगर पालिका अपने समिति साधनों से नहीं कर सकती है, सरकार द्धारा दिये जाने वाले अनुदान से हो सकती है।क्योकि नगर पालिका क्षेत्र कम होने से भवन कर,तहबाजारी अन्य मदो से आय के स्रोत कम है। नगर पालिका क्षेत्र के विस्तार से नगरपालिका के मदों में बढोत्तरी हो सकती है। रूद्रप्रयाग नगर पालिका में वार्डो की सख्यां सात है।

केदारनाथ –: केदारनाथ नगर पंचायत द्वादश ज्योतिर्लिगों मे से एक है, वर्ष 1928 में प्रकाशित गढ़वाल का इतिहास के लेखक पं0 हरिकृष्ण रतूड़ी ने केदारनाथ का वर्णन इस प्रकार किया, केदारनाथ में पण्डों पुजारियों के घर धर्मशालायें काफी तोर पर हैं। केदार पुरी भी शीतकाल में हिमाच्छादित होकर अगम्य हो जाती हैं। यहाँ मई से सितम्बर के अन्त तक पूजा अर्चना और यात्रियों के दर्शन होते हैं, केदारनाथ के रावल तथा पूजक दक्षिण मालेवर के जंगम जाति के होते है। वर्ष 1886 मे प्रकाशित हिमालय गजेटियर लेखक ई0टी0एटकिंसन ने केदारनाथ का वर्णन इस प्रकार किया केदारनाथ एक मंदिर ब्रिटिश गढ़वाल में नागपुर परगने में मल्ला कालीफाट पट्टी में 30°44″ उत्तरी आक्षांश से 79°6″ 33°11″ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। जो समुद्रतल से 11753 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह मंदिर महापंथ चोटी के नीचे बर्फानी श्रृखला से समकोण बनाती हुई पहाडी हैं, मन्दाकिनी घाटी के सिर पर समतल जमीन पर साफ सुथरी मोहरे वाली इमारत पर है। जिसके हर तरफ सजावटी आले व प्रतिमाएं बनी है, पीछे की ओर सलेटी पत्थर की मीनार है, मीनार के अन्दर गर्भ गृह है, मंदिर के चारों ओर पत्थरों के मकान है, जिसमें यात्री ठहरते है मन्दिर सम्बन्घित लेख 1820 ईसवीं का मिला हैं, जिसमें केदारनाथ मंन्दिर की आय भेंट सहित होती हैं, जिसमें 54 गॉव व उनका लगान प्रति बर्ष 857रूपए और 5000से 10,000रु0 तक भेंट पूजा शामिल है।

नगर पंचायत केदारनाथ –: श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ मन्दिर समिति यात्रियों की सुख सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार स्वायत शासन अनुभाग –1 की अधिसूचना संख्या 7392 टी / 9–1–77 लखनऊ दिनांक 7 अक्टूबर 1977 के द्वारा केदारनाथ नगर पंचायत का गठन किया गया, यह निकाय प्रशासक के नियंत्रणाधीन है, निकाय का निर्वाचन नहीं होता है। निकाय का प्रशासक अधिकारी जिलाधिकारी होता है, जिसके अधिकार नियत प्राधिकारी में निहित है, केदारनाथ निकाय का क्षेत्रफल 35 एकड़ है, 2001 के अनुसार इस निकाय क्षेत्र की जनसंख्या 479 हैं,

वर्तमान समय में केदारनाथ में पर्यटको की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है ।पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने से केदारनाथ क्षेत्र में पर्यावरण में परिर्वतन हो रहा है ।जिससे मानव,जीव जन्तुओं को भारी क्षति हो रही है ।वर्ष 2013 में आयी प्राकृतिक आपदा से केदारनाथ मन्दिर को छोडकर अधिकांश आवास, मानव, जीव जन्तुओं को भारी नुकसान हुआ था, जिसका मुख्य कारण बढते पर्यटकों तथा मानवीय गतिविधियों द्वारा प्रकृति में हस्तक्षेप करना है। जहॉ उॅचाई वाले क्षेत्रों वर्षा बर्फ के रूप होती थी आज वर्षा बर्फ में न होकर मूसलाधार हो रही है। जिससे इस क्षेत्र में प्राकृतिक आपदा आ रही है। जिसका उदाहरण केदारनाथ क्षेत्र में स्थित ताल में अधिक जल भराव से ताल का तटबन्धो के टूटना है ।सरकार एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के द्वारा केदार नाथ क्षेत्र को पुनः विकसित किया जा रहा है। वर्ष 2013 के बाद पर्यटको की संख्या में निरन्तर वृद्वि हो रही है। केदार नाथ पंचायत क्षेत्र की मुख्य समस्या है, पर्यटकों द्वारा अपने साथ जो प्लास्टिक बस्तुऐ ले जाते है। तथा विभिन्न स्थानों में छोड देते हैं। जिससे काफी गंदगी फैल जाती है, प्लास्टिक वस्तुओं पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए । पर्यटको को

केदारनाथ मन्दिर तक जाने की अनुमति दी जानी चाहिए । पर्यटक मन्दिर परिसर के आलवा अधिक उॅचाई वाले क्षेत्रों में चले जाते है। अपने साथ लाये हुये प्लास्टिक बस्तुओं को उन स्थानों में छोड देते है। तथा पर्यटकों के आवागमन से वन्य जीवजन्तु ,पर्यावरण प्रभावित होता है।पर्यटकों को उॅचाई वाले क्षेत्रों में जाने पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। केदारनाथ क्षेत्र में आवासीय भवनों का अनाधिकृत विकास पर प्रतिबन्ध होना चाहिए, आवासीय भवन सीमित होने चाहिए। तथा भूकम्परोधी होने चाहिए। जिससे आपदा के समय नुकसान कम हो सके।

केदारनाथ मे विभिन्न वर्षो में यात्रियों की संख्या

वर्ष	यात्रीयों की संख्या	वर्ष	यात्रीयों की संख्या
1988—99	137094	2007	557423
1989—90	115081	2008	470048
1990—91	117774	2009	403636
1991—92	118750	2010	400511
1992—93	141704	2011	571601
1993—94	118653	2012	573040
1994—1995	106500	2013	149715
1996—2000	300000	2014	40922
2000—2001	193628	2015 2016	333656 319836

बद्री केदारनाथ मंदिर समिति कार्याल उत्तराखण्ड नगर एवं नगर पालिका

नगरो की समस्या व समाधान

नगरीकरण को आर्थिक विकास का धोतक माना जाता है । उत्तराखण्ड राज्य में सन, 1991 से 2001तक नगरी जनसंख्या में 34,9 प्रतिशत की वृद्वि हुई हैं। जो राष्ट्रीय नगरीय जनसंख्या वृद्वि दर से अधिक है जबकि उत्तराखण्ड की ग्रामीण जनसंख्या मे केवल 5.9 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। उत्तराखण्ड प्रदेश के पर्वतीय जनपदों के नगरीय परिवेश मैंदानी क्षेत्रों के नगरो से भिन्न है, यहा विभिन्नता न केवल भौगोलिक कारणो से बल्कि नगरों के आकार की दृष्टि से भी हैं उत्तराखण्ड प्रदेश के नगर छोटे है। वित्तीय संसाधनो की कमी के कारण नगरीय सुविधाओ का अभाव रहता है। अधिकांश नगर निकाय अपने निजी आय स्रोतों से कर्मचारियों की वेतन भतों का भुगतान ही नही कर पाते है। राज्य सरकार से वित्तीय सहायता के विना नगर निकाये नागरिकों को नागरिक सुविधाये उपलब्ध नही करा सकते है।

जनपद रूद्रप्रयाग में सडक मार्ग के विकास तथा यात्रा मार्गो पर मानव वस्तियों का विकास हुआ है। इन कस्बों का विकास अनाधिकृत रूप से विकसित हुआ हैं। इन कस्बो में पानी की निकासी न होना, मकानों का विकास नियोजित ढंग से न होना, भूकम्परोधी मकानों का कम होना, गलियों का सही ढंग विकास न होना, पथ रोशनी का अभाव, पेयजल की समस्या, यातायात साधनो के लिये पार्किग की सुविधा का न होना आदि समस्याये है। इन कस्बों का विकास सुनियोजित न होने से इन कस्बो के आस पास जनसंख्या बढ जाती है। तथा जनता इन कस्बों को नगर पंचायत घोषित करने के लिये आन्दोलन करती है। जिसके परिणाम स्वरूप इन कस्बो को नगर पंचायत का दर्जा दिया जाता है। जो नगर पंचायत परिषदो के नियमों को पूर्ण करते है। नगर पंचायत बनने के वाद इन कस्बों के सीमाकंन की समस्या होती है क्योंकि ये कस्बे पूर्व में ही विकसित होते है, इन कस्बो में अनेक समस्यायें होती है। जैसे पानी निकासी की समस्या, क्योकि ये कस्बे पानी निकासी के अनुरूप विकसित नही है। पथरोशनी के लिये विद्युत लाइन बिच्छाने में कठिनाई होती है। क्योकि इन कस्बों के मकान सटे सटे रहते हैं, नगर पंचायतो में पार्किग एवं पार्क बनाने की समस्या होती है,क्योकि पर्वतीय क्षेत्रों में समतल भूमि कम उपलब्ध होने के कारण पार्किग एवं पार्क का विकास सही नही हो पाता है, स्कूल एवं अन्य सुविधाओं के विकास के लिये भूमि उपलब्ध नही होती है। उत्तराखण्ड सरकार, तहसील प्रशासन एवं अन्य प्रशासनिक इकाई को ध्यान देना चाहिए कि किन कस्बों की जनसंख्या में वृद्वि हो रही वहां उन कस्बो का विकास नियोजित मानको के अनुरूप हो, जिसमें भविष्य में नगर पंचायत का दर्जा मिलने पर इन समस्याओं में कमी आ सके ।

जनपद रुद्रप्रयाग में जिन कस्बों की जनसंख्या में वृद्वि होने से सरकार द्वारा इन कस्बों को नगर पंचायत बनाने की घोषणा की है। रही है। इन कस्बो में अगस्त्यमुनी, चन्द्रापुरी, ऊखीमठ है। तथा जिन कस्बो की जनसंख्या में वृद्वि हो रही है। इन कस्बो में तिलवाड़ा, मयाली, गुप्तकाशी, चोपता, भीरी, सतेराखाल सुमेरपुर, रतुडा आदि है। इन कस्बों, में दुकान,, बैंक, स्कूल, मेडिकल, स्टोर, अस्पताल, लघु उद्योग जैसे चक्की,गत्ता फैक्ट्री,प्रेस,पो0ओ0,पी0सी0ओ0, आदि के विकास, से भविष्य में ये कस्बें नगर पंचायत का दर्जा पाने के हकदार है वर्तमान समय में इन कस्बो का विकास सुनियोजित ढंग के आधार पर किया जाय तो भविष्य में नगर पंचायत बनने पर कुछ समस्याओं में कमी आ सकती है। जैसे भवनों का अनाधिकृत विकास, गलियों का सही विकास, सीवरेज की व्यवस्था, सड़कों का सही विकास, विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था, पार्को का विकास, यातायात व्यवस्था का सही होना, है।

सन्दर्भ सूची

1 Govind Nand Semwal 2003 –Uttranchal Nager Aur Nagr Palikayein Sarsuwati Publication 6 Falti line Dehradun

2.पाठक गणेश कुमार 2001– भारत में जनसंख्या संरचना की बदलती प्रवृत्तियां, देश काल सम्पदा सेन्ट्रल माइन प्लालिंग एण्ड डिजाइन इन्सटीट्यूट रांची। पृ0 सं0 169

3.Distribution Pattern of Scheduled caste population in india. Population Geography Vol. II no.12 Chandigarh.

4.Treovartha G.T. 1953 the case for population Geography A.A A.G. 43 PP71-79

5.Hoogon Devid J.N. 1960 the distribution of population as the assetial Geographical expression conabias geography no

6. Chandra, R.C. (1980): Introduction to population Geography, Kalyani publication, New Delhi.

7.Maurya, S.D., Population Geography, Sarda pustak Bhawan Allahabad.

8.Chandana, R.C.,: Geography of population Concept, Determinants and Pattern, Kalyani publication, New Delhi.

9.Trewarth, G.T. (1959): A Geography of population world patterns, John willay & wiley & Sons, New York.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com